अध्ययन सामग्री

विषय- हिन्दी

सेमेस्टर- प्रथम(01) स्नातकोत्तर

प्रश्न पत्र- तृतीय(cc-03)

भक्तिकाल

पदनाम- डॉ स्मिता जैन

एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग

एच डी जैन कॉलेज, आरा

19:22

Scanned with CamScanner

भक्तिकाल

(सं.१३७५-१७००)

२. भक्ति काल की परिस्थितियाँ

हिन्दी साहित्य के पूर्व मध्यकाल को भक्ति काल कहाँ जाता है। इस काल में भक्ति काव्य धारा के साथ काव्य की अन्य परम्पराएँ भी रही हैं। भारत में मध्य काल में भागवत पुराण भक्ति प्रमुखता से रही ? भागवत भक्ति दक्षिण से होकर उत्तरी भारत भक्ति परम्परा से एकरूप होकर पूरे भारत वर्ष में व्याप्त हो गई। मध्यकालीन भारतीय साहित्य का मूल स्वर भक्ति रही हैं। भगवान की निर्गुण एवं सगुण भक्ति पर बल दिया गया था। तत्कालीन भारत की सभी प्रमुख मराठी, गुजराती, पंजाबी, बंगला, तमिल, मल्यालम और कन्नड आदि भाषाओं में भक्ति का साहित्य लिखा गया। शुक्लजी ने ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी, राम भक्ति काव्य, कृष्ण भक्ति काव्य आदि भक्ति की धाराओं का उल्लेख किया हैं। भक्तिकालीन साहित्य के उद्‌भव और विकास को समुचित रुप में अवगत करने के लिए तत्कालीन परिस्थितीयाँ जानना अनिवार्य हैं। अतः तत्कालीन विभिन्न परिस्थितीयों का विवेचन किया जा रहा हैं।

१) राजनैतिक परिस्थितियाँ :

हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल तक उत्तरी भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना हो चुकी थी। किन्तु इन दिनों मुगलों और अफगानों में परस्पर संघर्ष जारी हुआ। इस समय मुस्लिमों नें हिन्दुओं से संबंध स्थापित कर अपना शासन दृढ करना शुरु किया।

भक्तिकाल का समय सं. १३७५ से १७०० तक के कालखण्ड में माना जाता हैं। इस कालखण्ड को दो भागों में विभाजित किया जा सकता हैं। प्रथम भाग सं १३७५ से १५८३ तक और दुसरा सं. १५८३ से १७०० तक। प्रथम भाग में दिल्ली पर तुगलक और लोधी वंश का शासन था। दुसरे भाग में मुगलवंश के बाबर, हुमायुँ, अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ का शासन रहा हैं। मुगलवंश काल राजनीतिक दृष्टी से प्रायः यह काल अशान्त और संघर्षमय रहा था।

१२९५ में अल्लाउद्दीन खिलजी दिल्ली की गद्दी पर बैठा। उसने मालवा प्रांत और महाराष्ट्र को जीत लिया। गुजरात जीतकर राजपुताने घराने कों घेर लिया और दक्षिण भारत में मुस्लिम शासन पहुँचा। अल्लाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के पश्चात दिल्ली का शासन बलहीन हुआ। सन १३२० में गयासुद्दीन तुगलक ने उस में शक्ति प्रदान की। कुछ काल के उपरान्त प्रान्तिक शासकों में स्वतंत्र अस्तित्व बनाने में लगें रहें। मेवाड में हम्मीर सिसोदिया १३२६ में स्वतंत्र हो गया। इन्हीं दिनों विजयनगर में हिन्दू राज्य की स्थापना हुई। मदुरा और बंगाल में दिल्ली सल्तनत के सुबेदार स्वतंत्र सुल्तान बन गए। दक्षिण में बहामनी राज्य की स्थापना हुई। कश्मीर में शाहमीर ने अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया।

१५ वी शताब्दी प्रान्तीय शासकों का युग रहा है। इस काल में राजस्थान और मेवाड की उन्नति हुई। महाराणा लाखा, चूडा और कुंभा के शासन काल में वह एक प्रमुख शक्ति बना। मालवा, गुजरात,बंगाल और कश्मीर के शासक स्वतंत्र अस्तित्व बनाए हुए थे। बुंदेल खण्ड में

Scanned with CamScanner

गहड़वाल वंशज बुंदेल सरदार राज्य करने लगा था। उड़ीसा में सुर्यवंशी कपिलेन्द्र ने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। बाबर ने १५२६ में पानिपत के मैदान में नवीन उपकरणों के प्रयोग से इब्राहिम लोधी को पराजित किया। बाबर ने राणा सांगा को भी पराजित किया। परन्तु बाबर के पुत्र हुमाँयु को शेरशाह सुरी ने पराजित किया। शेरशाह के समय में ही हिन्दी का अमरकाव्य 'पद्मावत' लिखा गया। शेरशाह सुरी के उत्तराधिकारी अयोग्य निकले परिणामतः मुगलों में अकबर जैसा शासक हुआ। तत्कालीन छोटे छोटे राजाओं ने अकबर का अधिनत्व स्वीकार कर लिया। मेवाड़ के महाराणा प्रताप अकेले रह कर अंत तक संघर्षरत रहे। महाराणा प्रताप का पुत्र अमरसिंह जंहागीर से १६ वर्ष लड़ा पर अन्त में उसने अधीनता मान ली। शाहजहाँ के अन्तिम दिनों में बुन्देलखण्ड में चंपतराय व महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी महाराज की सत्ता स्थापित हुई।

भक्तिकाल का साहित्य राजनीतिक वातावरण के प्रतिकु ल है। कबीर, जायसी, तुलसी और सूर इन कवियों को न तो सीकरी से काम था और न प्राकृत जन गुण–गान से सरोकार था।

सामाजिक परिस्थितियाँ :

१५वी शताब्दी तक आते आते हिन्दू और मुस्लिमों के बीच सामंजस्य की भावना निर्माण हुई थी। जीवन के कई क्षेत्र में आदान–प्रदान कर रहे थे। कुछ परिवार पुर्ववत हिन्दू बनने के लिए प्रयत्नशील थे। इनके बीच विवाह सम्बन्ध भी होने लगे थे। कश्मीर सुलतान शाह मीर के पूर्वज हिन्दू थे। उन्होंने अपनी लडकियों का विवाह हिन्दू सामन्तों से कर दिया था। लडके उल्लेशेर का विवाह हिन्दू सेनापति की लड़की से हुआ। लड़की पति धर्म स्वीकार कर लेती थी। यह वैवाहिक सम्बन्ध सामन्त वर्ग तक सीमित थे। जनसामान्य में जाति–पाति की भावना अधिक दृढ थी। इस काल में संत कबीर ने जाति–पाति भेद, अन्धविश्वास का प्रखर विरोध किया। खान–पान के कोई बन्धन नहीं थे। चौदहवी शताब्दी तक यह बन्धन कड़े नहीं थे। किन्तु आगे छुआछूत और खान–पान के बन्धन अधिक कड़े होते गए।

शेरशाह ने जमींदारी प्रथा को बन्द किया था। किन्तु मुगलों ने इसे फिर से शुरू किया। बादशाह व जागीरदारों का जीवन भोग विलास तथा ऐश्वर्यपूर्ण था। बादशाह को प्रजा की सुख–दुख की ओर ध्यान न था। गुजरात, खानदेश, और दक्षिण में अकाल पडने पर लगान में छूट देकर अनाज बटँवाया गया था। विलासी मुस्लिम अधिकारीयों की सस्ती रसिकता से रक्षा पाने के लिए हिन्दू समाज में पर्दाप्रथा और बाल विवाह का प्रचलन हुआ। कुछ मुस्लिम शासकों में रुप–लिप्सा और काम–पिपासा भी कम नहीं थी। अल्लाउद्दीन ने ५० प्रतिशत भाग कर के रुप में बडी कठोरता से उगाहा था। हिन्दू और मुस्लिमों के बीच शासित और शासक का भेद था वहाँ धीरे धीरे एक दुसरे के प्रति उदार भी होने लगे थे।

धार्मिक परिस्थितीयाँ :

इस काल की धार्मिक परिस्थिती बडी शोचनीय थी। विविध धर्म और सम्प्रदायों का प्रचलन था। इन धर्मो नें परस्पर समन्वय की भावना नहीं थी। इस काल में वैष्णव धर्म परम्परा की जड़े मजबूत कर रहा था। बौध्द धर्म का विकृत रूप उभरा था। सूफी धर्म भी अपनी जड़े मजबूत बना रहा था।

Scanned with CamScanner

१) बौध्द धर्म : – बौध्द धर्म के संस्थापक तथागत भगवान गैातम बुध्द है। भगवान बुध्द के महानिर्वाण के पश्चात धर्म का महायान और हीनयान इन दो भागों में विभाजन हुआ। हीनयान में सिध्दांत पक्ष की दार्शनिक जटीलता थी। परिणामतः कम लोगों की आस्था उस सम्प्रदाय के प्रति बनी रही। महायान में सिध्दांतों की अपेक्षा व्यवहार पक्ष को प्रधानता दी गयी थी। कालांतर में हीन यान में कट्टरता एवं संकीर्णता आई। हीनयान अधिक कट्टरता के कारण संकुचित होता चला गया और महायान अधिक उदारता के कारण विकृत। बौध्द धर्म की इस स्थिति का पुरा फायदा शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट ने उठाया और वैदिक हिन्दू धर्म का पुनरुध्दार किया। सुसंस्कृत जनता शंकराचार्य की ओर आकृष्ट हुई। महायान सम्प्रदाय के कारण असंस्कृत वर्ग में तंत्र–मंत्र तथा व्यभिचारबाजी से वशीभूत किये रखा। इसीलिए इसका कालांतर में मंत्रयान नाम पड़ा। मंत्रयान ने वाम मार्ग की मद्य, मांस, मैथून,मुद्रा आदि अनेक मुद्राओं को अपना लिया। नारी के प्रति वासना वृत्ति को साधना का आवश्यक अंग माना गया। मंत्रयान से वज्रयान निकला और उसमें चौरासी सिध्द हुए। इन में गोरखनाथ प्रमुख रहे। इन्हों ने सिध्द एवं नाथ सम्प्रदाय चलाया।

२) वैष्णव धर्म :– शंकराचार्य के पूर्व दक्षिण से आए अलवार संतों ने भक्ति का प्रचार एवं प्रसार किया। इस समय अनेक धार्मिक सम्प्रदाय निर्माण हुए। जिन में विष्णू भक्ति को अधिक महत्व दिया गया। विष्णू के अवतारों में राम और कृष्ण की स्थापना हुई। रामानन्द ने भक्ति के द्वार सब के लिए खोले और जनभाषा में अपने सिध्दांतों का प्रचार किया। इनके पूर्व रामानुज, मध्वाचार्य, निम्बार्क आदि ने संस्कृत में अपने सिध्दांतो का प्रचार किया। विष्णु के अवतार भगवान श्री कृष्ण की उपासना के विविध भेद निर्माण हुए। भगवान कृष्ण को भागवत पुराण के दशम स्कंध में वर्णित कृष्ण के रुप में अपना आराध्य माना गया। कालान्तर में भक्ति पध्दती में विलासिता व भोग की प्रधानता बनी रहीं।

३) सूफी धर्म :– भारत पर मुस्लिमों के आक्रमण पूर्व ही सूफी संत कवियों ने इस्लामी वातावरण तैयार किया था। कुछ सम्प्रदाय प्रचलित रहे। सूफी कवियों ने भारतीय अध्यात्मिक और अद्वैत को अपने ढंग से स्वीकार किया और प्रेमस्वरुप निराकार, निर्गुण ईश्वर का प्रचार प्रसार किया। सूफी संत कवि सच्चरित, विद्वान और सहनशील थे। हिन्दू धर्म के प्रति उनकी आस्था एवं विश्वास था। इसके फलस्वरूप सूफियों ने भारतीय जनता के मन को जीता है। नाथ सम्प्रदाय के प्रभाव के कारण सूफियों ने उनके विचार व एकेश्वरवादी विचारों को अपनाते हुए इस्लाम के साथ समन्वय करने का प्रयास किया। अतः इन्होंनें हिन्दू–मुस्लिम के अजनबीपन को मिटाया।

साहित्यिक परिस्थितीयाँ : –

भक्तिकाल के विचारकों ने गद्य में अपने विचार व्यक्त न करके उन्हें छंद–बध्दरुप में व्यक्त किया। संस्कृत में इस संबंध में टिकाओं, व्याख्याओं की सृष्टी होती रही। किसी नवीन मौलिक उद्भावनाओं से काम नहीं लिया गया। सिध्दांत प्रतिपादन तथा भक्ति प्रचार की भावना उस समय के समस्त साहित्य में काम कर रही हैं। कबीर, जायसी, सूर, तुलसी जैसे भावुक

Scanned with CamScanner

कवी भी इस मनोवृत्ती से अछुते नहीं रहें। इस युग में हिन्दूओं का उच्च वर्ग संस्कृत भाषा व्यवहार में उपयोग कर रहा था। मुसलमान भी मुख्यतः मुगलसत्ता के कारण राज काज में फारसी को स्वीकृत किया गया था। फलतः इतिहास के अनेक ग्रंथो का निर्माण फारसी में किया गया। इस काल में गद्य का प्रयोग राजस्थान की भाषाओं में और कुछ ब्रज भाषा की वचनिकाओं में हुआ। बादशाहों तथा राजाओं के आश्रित कवियों नें प्रशास्ति, श्रृंगार, रीति, नीति आदि से संबंधित मुक्त और प्रबंध दोनों प्रकार की रचनाएँ की हैं।

सांस्कृतिक परिस्थितियाँ :

समन्वयात्मकता भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता है। सांस्कृतिक चेतना की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति सार्वभौम सत्य के आधार पर प्रतिष्ठित धार्मिक भावना और दार्शनिक चिन्ताधार के माध्यम से हुई हैं। कला, शिल्प, साहित्य और संगीत इन्ही की देन है। शैव, शाक्त, भागवत और गाणपत्य जैसे प्रमुख धर्मो में ज्ञान योगतंत्र और भक्ति की प्रवृत्तियों का समन्वय होने लगा। योग का प्रभाव उस समय इतना बढा कि भक्ति ज्ञान और कर्म के साथ भी योग शब्द को जोडा जाना आवश्यक समझा जाने लगा। समन्वयात्मकता की प्रवृत्ति धर्म के समान मुर्ति एवं वास्तुकलाओं में भी देखी जा सकती हैं। खजुराहों के वैद्यनाथ मन्दिर के शिलालेख में ब्रम्ह, जिन, बुध्द तथा वामन को शिव का रुप कहा गया है। भक्ति आंदोलन इसी समन्वयात्मक प्रवृत्ति का परिणाम है।

इसी काल में हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियाँ एक दुसरे के निकट आयी। संगीत, चित्र तथा भवन निर्माण में समन्वय आरंभ हुआ। साहित्य भी एक दुसरे से प्रभावित रहा। नायक नायिकाओं के नयनाभिराम चित्रों तथा विविध कलाओं के रूप में दोनों की चित्रकलाओं का समागम दर्शनीय है। काव्यों में भी राग–रागिनियों का प्रयोग किया जाने लगा।

भक्तिकाल को साहित्य की दृष्टी से सुवर्ण युग कहाँ गया है। इस काल में भारत की लगभग सभी भाषाओं का साहित्य सृजन हुआ है। भक्तिकाल नें हिन्दी को सुर, तुलसी, कबीर, जायसी, मीरा, रहीम, रसखान जैसे प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार दिए हैं। भक्ति साहित्य एक साथ ह्रदय, मन और आत्मा की भूख को क्षमता है।

◆◆◆◆◆◆

Scanned with CamScanner